स्कूलों में बेटियों को वित्तीय प्रबंधन सिखाएं : कृति

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति खरबंदा ने स्कूली स्तर से ही बच्चों को वित्तीय शिक्षा दिए जाने की जरूरत पर जोर देते हुए कहा है कि लड़कियों को पीरियड्स और ओवरऑल वेल-बीइंग के साथ-साथ पैसे कमाने, बचाने और निवेश करने की जानकारी भी दी जानी चाहिए।कृति ने नई दिल्ली में आयोजित 'वी विमेन वॉन्ट कॉन्क्लेव एंड शक्ति अवॉर्ड्स 2026' में अपनी बात रखते हुए कहा कि वह हमेशा से लड़कियों और महिलाओं के आत्मनिर्भर होने की समर्थक रही हैं। उन्होंने अपने जीवन का अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्होंने 17 वर्ष की उम्र में कमाना शुरू कर दिया था और अपने परिवार की जिम्मेदारी भी संभाली है.

उन्होंने कहा, 'मैं हमेशा से एक लड़की और एक महिला के तौर पर आत्मनिर्भर होने की समर्थक रही हूं. मैंने 17 साल की उम्र में कमाना शुरू कर दिया था. मैंने अपने परिवार की जिम्मेदारी भी उठाई है और मुझे इस बात पर बहुत गर्व है. कृति ने बताया कि इस वर्ष फरवरी से उन्होंने दोबारा पढ़ाई शुरू की है और फिलहाल जियोपॉलिटिक्स के साथ-साथ अपने वित्तीय मामलों को संभालना भी सीख रही हैं. उन्होंने कहा कि पहली बार वह अपना पूरा वित्तीय पोर्टफोलियो खुद संभाल रही हैं, क्योंकि यह ऐसी चीज है जिसे उन्हें खुद करना सीखना जरूरी है. वित्तीय स्वतंत्रता के महत्व पर जोर देते हुए कृति ने कहा कि लड़कियों का आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें यह समझना भी जरूरी है कि वित्तीय दुनिया कैसे काम करती है.

उन्होंने कहा, जिस तरह हम हर महीने पीरियड्स और ओवरऑल वेल-बीइंग की बात करते हैं, उसी तरह बच्चों को यह भी सिखाया जाना चाहिए कि पैसे कैसे कमाने हैं, बचाने हैं, इन्वेस्ट करना है और फाइनेंस कैसे काम करता है. मुझे लगता है कि यह शिक्षा स्कूल से ही मिलनी चाहिए.

कार्तिक आर्यन की 'चंदू चैंपियन' की जर्नी हुई पूरी

बॉलीवुड अभिनेता कार्तिक आर्यन के लिए फिल्म 'चंदू चैंपियन' सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि मेहनत, अनुशासन और समर्पण से भरा सफर रहा है, जो अब राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का सम्मान मिलने के साथ मुकाम पर पहुंच गया है.फिल्म के निर्देशक कबीर खान ने कार्तिक के साथ इस खास उपलब्धि का जश्न बेहद खास अंदाज में मनाया. कबीर खान ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया है, जिसमें वह कार्तिक के साथ रस मलाई खाते और उनकी उपलब्धि का जश्न मनाते नजर आ रहे हैं.

वीडियो के साथ कबीर खान ने 'चंदू चैंपियन' से जुड़ी यादें साझा करते हुए लिखा कि 18 जुलाई 2022 को कार्तिक, साजिद नाडियाडवाला और उन्होंने फिल्म की घोषणा की थी. इसके बाद के दो वर्ष उनके लिए शानदार सफर रहे. उन्होंने कहा कि फिल्म बनाने के बाद उन्हें हमेशा इस पर गर्व रहेगा और घोषणा के चार वर्ष बाद कार्तिक के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने से यह सफर पूरा हो गया है. कबीर खान ने लिखा कि यह सही मायने में 'चंदू' नहीं, बल्कि 'चैंपियन' है और इस खुशी में एक नहीं, दो रस मलाई तो बनती है. रस मलाई का यह पल कार्तिक की 'चंदू चैंपियन' की जर्नी से खास तौर पर जुड़ा हुआ है. फिल्म में पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर की भूमिका निभाने के लिए कार्तिक ने एक साल से अधिक समय तक कड़ी ट्रेनिंग की और अपनी फिटनेस पर काफी मेहनत की थी. इस दौरान उन्होंने अपनी डाइट को लेकर भी सख्त अनुशासन अपनाया और लंबे समय तक चीनी से पूरी तरह दूरी बनाए रखी. फिल्म की करीब आठ महीने लंबी शूटिंग पूरी होने के बाद कबीर खान ने कार्तिक को उनकी पसंदीदा रस मलाई खिलाई थी. एक साल से अधिक समय बाद मिठाई खाने के बाद कार्तिक ने सोशल मीडिया पर इस पल को साझा करते हुए इसे शानदार जीत जैसा बताया था.

थिएटर के बाद अब ओटीटी पर आएगी कंगना की फिल्म

कंगना रनौत, गिरिजा ओक और स्मिता तांबे अभिनीत भारत भाग्य विधाता समर्पण और वीरता की भावपूर्ण कहानी है, जो इस स्वतंत्रता दिवस पर हर किसी को देखनी चाहिए - डिजिटल प्रीमियर के साथ दर्शकों को साहस, धैर्य और निस्वार्थ सेवा की भावना का जश्न मनाने के लिए आमंत्रित करता है.

पूरे भारत के दर्शकों तक दमदार, प्रेरणादायक और भारतीय संस्कृति से जुड़ी कहानियाँ पहुँचाने की अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए, यह स्वदेशी ओटीटी मंच उन गुमनाम नायकों की असाधारण वीरगाथाओं को सामने लाता है, जिनकी बहादुरी, समर्पण और निस्वार्थ सेवा उन मूल्यों का सजीव प्रतीक है, जो हमारे राष्ट्र की पहचान हैं. 'भारत भाग्य विधाता' का लेखन और निर्देशन मनोज तापड़िया ने किया है.

छह साल बाद भी कायम है कारगिल गर्ल का जादू

छह साल पहले रिलीज हुई जान्हवी कपूर की फिल्म 'गुंजन सक्सेना: द कारगिल गर्ल' ने दर्शकों के सामने एक ऐसी कहानी रखी थी, जिसमें सपना देखने से लेकर उसे हकीकत में बदलने तक के संघर्ष को दिखाया गया. फिल्म की कहानी गुंजन सक्सेना के जीवन से प्रेरित है, जिन्होंने भारतीय वायुसेना में सेवा देते हुए कारगिल युद्ध के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. फिल्म में उनके सफर के कई ऐसे दृश्य हैं, जो आज भी दर्शकों को मुश्किल परिस्थितियों में हार न मानने की प्रेरणा देते हैं.

कहानी का पहला अहम पड़ाव गुंजन का बचपन है. वह कम उम्र में ही पायलट बनने का सपना देखती हैं. जहां समाज लड़कियों के लिए सपनों की सीमाएं तय करता नजर आता है, वहीं उनके पिता अनूप कुमार सक्सेना बेटी के सपने पर विश्वास करते हैं.

टाटा प्ले ने 20 साल पूरे होने का जश्न मनाया

टाटा प्ले अपनी 20वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में भारत की विविध लोक संगीत परंपराओं का जश्न मनाने वाले एक नए अभियान में अपने प्रतिष्ठित 'लाइफ जिंगलाला' टैगलाइन को वापस ला रहा है. ओगिल्वी द्वारा परिकल्पित इस अभियान में पूछा गया है, 'जब जीवन जिंगलाला हो तो कैसा लगता है?' और यह क्षेत्रीय संगीत और कहानी के माध्यम से ब्रांड के जाने-पहचाने टैगलाइन को नए सिरे से प्रस्तुत करता है.

इस अभियान में भारत भर के लोक संगीतकार और कलाकार शामिल हैं, जिनके गीत तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बांग्ला, अवधी और गुजराती भाषाओं में प्रस्तुत किए गए इस अभियान का मूल संगीत माटी बानी द्वारा तैयार किया गया है, जबकि संगीत निर्माण और निर्देशन कार्तिक शाह ने किया है.

टेलीविजन हलचल

पुष्पा इम्पॉसिबल' कलाकारों ने बताए बचपन के यादगार बॉलीवुड विलेन

शो 'पुष्पा इम्पॉसिबल' में इन दिनों पुष्पा और कादंबरी के बीच चल रहा टकराव कहानी को नए मोड़ दे रहा है. कादंबरी की लगातार चालों ने पुष्पा और उसके परिवार के सामने नई मुश्किलें खड़ी कर दी हैं. पर्दे पर खलनायकी के इस रंग के बीच शो के कलाकारों ने उन बॉलीवुड विलेन को याद किया, जिन्होंने कभी उनके बचपन को डराया, हंसाया और अपने अभिनय से प्रभावित किया था. आइकॉनिक बॉलीवुड विलेन की बात हो और गब्बर सिंह का नाम न आए, ऐसा संभव नहीं. शो में चिराग की भूमिका निभा रहे नितिन बाबू ने 'शोले' के गब्बर सिंह को अपना पसंदीदा विलेन बताया. उनके लिए गब्बर की सबसे खास बात उसका प्रभाव और उसके यादगार संवाद हैं. गब्बर का किरदार ऐसा बना कि फिल्म के संवाद आज भी आम बातचीत का हिस्सा नजर आते हैं. यही वजह है कि नितिन के लिए यह किरदार सिर्फ खौफ पैदा करने वाला नहीं, बल्कि अभिनय और लेखन की शानदार मिसाल भी है. शनाया का किरदार निभा रहीं मुस्कान बामने की पसंद है 'मिस्टर इंडिया' का मोगैंबो. उनके मुताबिक मोगैंबो की शख्सियत, उसका अंदाज और उसका मशहूर संवाद उसे दूसरे खलनायकों से अलग बनाता है. किरदार में डर के साथ जो स्टाइल और करिश्मा था, वह आज भी दर्शकों को आकर्षित करता है. अश्विन की भूमिका निभा रहे समरिध बावा ने 'अंदाज अपना अपना' के क्राइम मास्टर गोगो को चुना.

कृषि जगत

मानसून में आलू की खेती का सही तरीका

मानसून के मौसम में खेती करने वाले किसानों के लिए अगस्त महीना कई फसलों की तैयारी का समय होता है. इसी दौरान किसान आलू की खेती की शुरुआत भी कर सकते हैं. हालांकि बारिश के मौसम में आलू की खेती करते समय सामान्य मौसम की तुलना में अधिक सावधानी बरतने की जरूरत होती है. आलू की फसल के लिए नमी जरूरी होती है, लेकिन खेत में ज्यादा पानी जमा होना फसल के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है.

आलू की खेती के लिए सबसे पहले खेत का सही चयन करना जरूरी है. ऐसी भूमि जहां पानी आसानी से निकल सके, वहां आलू की खेती बेहतर होती है. खेत में जलभराव होने से कंदों के सड़ने और रोग लगने की संभावना बढ़ जाती है. इसलिए मानसून में खेती करने से पहले खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था जरूर करें.

बुवाई से पहले खेत की अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए, जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाए और कंदों का विकास बेहतर तरीके से हो सके. किसानों को हमेशा प्रमाणित और रोग मुक्त बीज का इस्तेमाल करना चाहिए. बेहतर उत्पादन के लिए उन्नत किस्मों का चयन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. बीज लगाने से पहले उसका उपचार करना फायदेमंद माना जाता है. इससे फसल को शुरुआती रोगों से बचाने में मदद मिल सकती है. आलू की बुवाई के समय खेत में उचित दूरी बनाए रखना जरूरी होता है, ताकि पौधों को पर्याप्त जगह और पोषण मिल सके.

मानसून में आलू की खेती के दौरान सबसे बड़ी चुनौती रोगों का प्रकोप होता है. लगातार बारिश और अधिक नमी के कारण झुलसा रोग जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं. इसलिए किसानों को नियमित रूप से फसल की निगरानी करनी चाहिए और किसी भी बीमारी के शुरुआती लक्षण दिखाई देने पर कृषि विशेषज्ञों की सलाह लेनी चाहिए.

खरीफ में कौन-सी सब्जियां देंगी ज्यादा फायदा

खरीफ सीजन में मानसून की बारिश किसानों के लिए खेती का सुनहरा अवसर लेकर आती है. इस मौसम में मिट्टी में नमी पर्याप्त होने के कारण कई सब्जी फसलों की खेती आसानी से की जा सकती है.

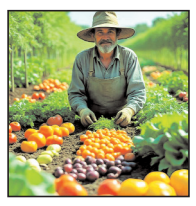

किसान अगर अपने क्षेत्र की जलवायु, मिट्टी की गुणवत्ता और बाजार की मांग को ध्यान में रखते हुए सब्जियों का चयन करें तो कम समय में अच्छा उत्पादन और बेहतर आमदनी हासिल कर सकते हैं. खरीफ मौसम में भिंडी सबसे लोकप्रिय सब्जी फसलों में से एक है. इसकी खेती गर्म और नमी वाले मौसम में अच्छी होती है. भिंडी की मांग बाजार में लगातार बनी रहती है और इसकी तुड़ाई कई बार की जा सकती है, जिससे किसानों को नियमित आय मिलती रहती है.

लौकी, कद्दू और करेला जैसी बेल वाली सब्जियां भी बारिश के मौसम में अच्छी पैदावार देती हैं. इन फसलों के लिए खेत में उचित स्थान और सहारे की व्यवस्था करना जरूरी होता है. सही देखभाल के साथ किसान इन सब्जियों से अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं. बैंगन और मिर्च भी खरीफ सीजन के लिए उपयुक्त सब्जियां मानी जाती हैं.

मानसून में फसलों को फफूंद से बचाने के आसान उपाय

बारिश का मौसम खेती के लिए जितना फायदेमंद होता है, उतना ही फसलों के लिए चुनौतीपूर्ण भी हो सकता है. मानसून के दौरान खेतों में नमी का स्तर बढ़ जाता है, जिसके कारण फफूंद जनित रोगों का खतरा तेजी से बढ़ने लगता है.

धान, सोयाबीन, कपास, मक्का, सब्जियों और अन्य कई फसलों में फफूंद संक्रमण के कारण उत्पादन प्रभावित हो सकता है. इसलिए किसानों को शुरुआत से ही फसल सुरक्षा के उपाय अपनाने चाहिए.

मानसून में फसलों को फफूंद से बचाने के लिए सबसे जरूरी कदम खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था करना है. लगातार बारिश के बाद खेत में पानी जमा रहने से जड़ों को पर्याप्त हवा नहीं मिलती और फफूंद के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बन जाता है. इसलिए खेत में अतिरिक्त पानी को बाहर निकालने की व्यवस्था जरूर करें.

यंग इंडिया

नीट में क्या होना चाहिए सफलता का मंत्र, ऐसे करें तैयारी

नीट पीजी की तैयारी लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थियों को मेडिकल पाठ्यक्रम के कई विषयों को एक साथ संभालना पड़ता है. ऐसे में बिना योजना के पढ़ाई करने पर सिलेबस पूरा होने के बावजूद रिवीजन और प्रश्न अभ्यास के लिए पर्याप्त समय नहीं बच पाता. यही कारण है कि तैयारी की शुरुआत से ही एक ऐसी रणनीति बनाना जरूरी है, जिसमें पढ़ाई के साथ रिवीजन, टेस्ट और गलतियों का विश्लेषण भी शामिल हो.

सबसे पहले विद्यार्थियों को पूरे सिलेबस को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर पढ़ाई का लक्ष्य तय करना चाहिए. हर दिन का लक्ष्य व्यावहारिक और पूरा करने योग्य होना चाहिए, ताकि तैयारी लगातार आगे बढ़ती रहे. मजबूत विषयों को तेजी से दोहराने के साथ कमजोर विषयों के लिए अतिरिक्त समय निर्धारित करना फायदेमंद साबित हो सकता है. इससे पढ़ाई का दबाव कम होता है और तैयारी ज्यादा व्यवस्थित तरीके से पूरी की जा सकती है.

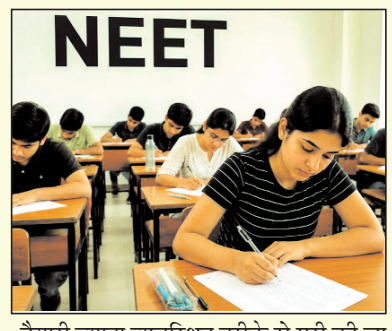

नीट की तैयारी के दौरान अध्ययन सामग्री का चयन भी बेहद महत्वपूर्ण होता है. बार-बार किताबें, नोट्स या अलग-अलग स्रोत बदलने से समय की बर्बादी हो सकती है. विशेषज्ञों के अनुसार विद्यार्थियों को सीमित और भरोसेमंद अध्ययन सामग्री के साथ तैयारी करनी चाहिए. अपने बनाए हुए शॉर्ट नोट्स और महत्वपूर्ण तथ्यों की सूची अंतिम समय के रिवीजन में काफी मददगार साबित हो सकती है. परीक्षा में सफलता के लिए रिवीजन को तैयारी का सबसे अहम हिस्सा माना जाता है. केवल एक बार पढ़ लेने से विषयों पर पकड़ मजबूत नहीं होती, इसलिए नियमित अंतराल पर पढ़े हुए टॉपिक को दोहराना जरूरी है.

खासतौर पर महत्वपूर्ण तथ्यों, अवधारणाओं और पहले गलत हुए प्रश्नों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए. इसके साथ ही प्रश्न अभ्यास और मॉक टेस्ट को तैयारी का नियमित हिस्सा बनाना चाहिए. मॉक टेस्ट से विद्यार्थियों को अपनी तैयारी का स्तर समझने के साथ समय प्रबंधन सीखने में भी मदद मिलती है. टेस्ट देने के बाद गलतियों का विश्लेषण करना जरूरी है, ताकि दोबारा वही गलती न हो. कई बार विद्यार्थी जानकारी होने के बावजूद जल्दबाजी या प्रश्न को सही तरीके से न समझ पाने के कारण अंक गंवा देते हैं.

रेलवे में 734 पदों पर भर्ती

10वीं-आईटीआई वालों को मौका

रेलवे में अप्रेंटिस के तौर पर करियर शुरू करने की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए रेल कोच फैक्ट्री कपूरथला की यह भर्ती महत्वपूर्ण अवसर लेकर आई है. आरसीएफ कपूरथला अप्रेंटिस भर्ती 2026 के तहत कुल 734 पदों पर उम्मीदवारों का चयन किया जाना है. इसके लिए आवेदन प्रक्रिया 7 अगस्त से शुरू हो चुकी है, जबकि ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तारीख 5 सितंबर 2026 निर्धारित की गई है. ऐसे में पात्र उम्मीदवारों को अंतिम तारीख का इंतजार करने के बजाय समय रहते आवेदन प्रक्रिया पूरी करने की सलाह दी जाती है. भर्ती में अलग-अलग तकनीकी ट्रेड के लिए पद निर्धारित किए गए हैं. इनमें फिटर के 180, वेल्डर जी एंड ई के 220, मशीनिस्ट के 60, पेंटर के 40, कारपेंटर के 40, इलेक्ट्रिशियन के 110, एसी एवं रेफ्रिजरेटर मैकेनिक के 44, मोटर व्हीकल मैकेनिक के 20 और इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिक के 20 पद शामिल हैं. पदों की संख्या के लिहाज से वेल्डर ट्रेड में सबसे ज्यादा अवसर हैं, जबकि फिटर और इलेक्ट्रिशियन ट्रेड में भी बड़ी संख्या में पद रखे गए हैं.

इस भर्ती के लिए उम्मीदवार का किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10वीं की परीक्षा कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ पास होना जरूरी है. इसके साथ संबंधित ट्रेड में आईटीआई या एनसीवीटी प्रमाणपत्र भी होना चाहिए. उम्मीदवारों को ध्यान रखना होगा कि अलग-अलग ट्रेड के लिए पात्रता की शर्तों में अंतर हो सकता है. इसलिए आवेदन करने से पहले संबंधित ट्रेड की योग्यता और आधिकारिक अधिसूचना में दी गई सभी शर्तों को ध्यान से पढ़ना जरूरी है. आयु सीमा की बात करें तो उम्मीदवार की न्यूनतम उम्र 15 वर्ष और अधिकतम उम्र 24 वर्ष निर्धारित की गई है.

बीपीएससी ने जारी किए दो परीक्षाओं के नतीजे, 181 छात्र चयनित

बिहार लोक सेवा आयोग ने दो अहम परीक्षाओं के परिणाम जारी कर दिए हैं. आयोग की ओर से घोषित नतीजों में कुल 181 उम्मीदवारों को सफल घोषित किया गया है, जिन्हें अब चयन प्रक्रिया के अगले चरण में शामिल होने का अवसर मिलेगा. परिणाम जारी होने के साथ ही लंबे समय से इंतजार कर रहे अभ्यर्थियों के बीच उत्साह बढ़ गया है. बीपीएससी की ओर से आयोजित परीक्षाओं में हर साल बड़ी संख्या में उम्मीदवार हिस्सा लेते हैं. सरकारी सेवा में जाने का सपना देखने वाले युवाओं के लिए यह परीक्षा सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक मानी जाती है. कठिन प्रतिस्पर्धा के बीच सफल होने वाले उम्मीदवारों के लिए परिणाम का दिन बेहद खास होता है, क्योंकि इसके बाद चयन की अगली प्रक्रिया शुरू होती है.

आयोग ने परिणाम जारी करते हुए सफल उम्मीदवारों की सूची उपलब्ध कराई है. अभ्यर्थियों को सलाह दी गई है कि वे अपने रोल नंबर और अन्य विवरणों के माध्यम से परिणाम की जांच करें. इसके अलावा आगे की प्रक्रिया, दस्तावेज सत्यापन या अन्य चरणों से जुड़ी जानकारी के लिए आयोग की आधिकारिक सूचना को ध्यान से पढ़ना जरूरी होगा. बीपीएससी की परीक्षाओं में सफलता हासिल करने के लिए उम्मीदवारों को प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और अन्य चरणों की तैयारी करनी होती है.

ऐसे में परिणाम जारी होने के बाद सफल उम्मीदवारों के सामने अब अगले चरण में बेहतर प्रदर्शन करने की चुनौती होगी. वहीं, जो उम्मीदवार इस बार सफल नहीं हो पाए हैं, उनके लिए यह समय अपनी तैयारी की समीक्षा करने और नई रणनीति बनाने का है. प्रतियोगी परीक्षाओं में केवल मेहनत ही नहीं, बल्कि सही रणनीति, समय प्रबंधन और नियमित अभ्यास भी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

दुधारू गाय-भैंस को कितना दें चारा

दुधारू गाय-भैंस पालने वाले किसानों के लिए पशुओं के आहार का सही प्रबंधन दूध उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। कई बार पशुपालक अधिक दूध की उम्मीद में पशुओं को ज्यादा मात्रा में चारा देने लगते हैं, लेकिन केवल ज्यादा चारा देना ही पर्याप्त नहीं होता. पशुओं को उनकी जरूरत के अनुसार संतुलित और पौष्टिक आहार देना जरूरी होता है. दुधारू गाय या भैंस को दिए जाने वाले चारे की मात्रा कई बातों पर निर्भर करती है. इसमें पशु का वजन, उम्र, नस्ल, स्वास्थ्य और रोजाना होने वाला दूध उत्पादन शामिल है. सामान्य तौर पर एक वयस्क दुधारू पशु को उसके शरीर के वजन के अनुसार हरा और सूखा चारा दिया जाता है. इसके साथ दूध उत्पादन के हिसाब से अतिरिक्त दाना और पोषक तत्व भी जरूरी होते हैं.

हरा चारा पशुओं के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है, क्योंकि इसमें पानी, विटामिन और जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं. बरसीम, ज्वार, मक्का, बाजरा और नेपियर घास जैसे हरे चारे पशुओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं. वहीं सूखे चारे में भूसा और अन्य रेशेदार आहार शामिल किए जाते हैं, जो पशुओं के पाचन तंत्र को बेहतर रखने में मदद करते हैं. दूध देने वाले पशुओं के लिए केवल चारा ही नहीं, बल्कि दाने की मात्रा भी महत्वपूर्ण होती है. अधिक दूध देने वाली गाय-भैंस को ऊर्जा और प्रोटीन की अधिक आवश्यकता होती है.